P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-11* July- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

नागार्जुन की कविता ''अकाल और उसके बाद'' का संवेदनात्मक दृष्टिकोण

सारांश

हिन्दी काव्य परंपरा में नागार्जुन आधुनिक प्रगतिशील संवेदना को सच्चे अर्थो में अंगीकृत करते हुये। आम आदमी की पीड़ा को समग्रता में त्याग करने वाले जनकवि है। इन्होने अपनी कविता ''अकाल और उसके बाद'' में अकाल की किसी भी प्रकार भयावहता का मार्मिक चित्रण किया है।

अकाल एक ऐसी आपदा है जो मात्र भोजन की समस्या, भूख की विकरालता ही नहीं लाती बल्कि अनेक असाध्य बीमारियों को भी निमंत्रण देती है। ऐसी विपदा के कारण मनुष्यों के साथ–साथ पशु–पक्षियों को भी भुखमरी का शिकार होना पड़ता है। शिथिलता की झॉकी नागार्जुन की इस कविता में प्रत्यक्ष दिखाई पड़ती है। कानी कुतिया, चूहों के साथ अचेतन वस्तुओं की भी पीड़ा यहां नजर आती है। सामान्य अवस्था में मनुष्य पर ही हर्ष–विषाद का प्रभाव दिखाई देता है, पर अकाल ने जीवन को इस कदर उपेक्षित कर दिया है कि 'चूल्हे' और 'चक्की' का संत्रास भी यहाँ उभरने लगा है।

इसके विपरीत ज्यों ही ''कुछ दाने घर'' के भीतर आये त्यों ही मानो एक बार फिर घर में सम्पन्नता का अहसास भर गया । आंगन से धुआं उठना मात्र भोजन बनने का ही नहीं बल्कि सभी के भीतर ऊर्जा के पुनरागमन का भी प्रतीक है। सुख और समृद्धि के चिन्ह सदैव बडे नहीं होते हैं। कवि की कविता में छोटी–छोटी वस्तुओं से प्राप्त होने वाले आनंद का संकेत भी मिलता है। कौए द्वारा पंखो को खुजलाया जाना मानो आलस्य के टूटने का संकेत करता है, जहॉ भोजन मिलने पर फिर से कार्य करने की ऊर्जा जाग्रत होती है और जीवन सामान्य प्रक्रिया से संचालित होने लगता है।

प्रमोद निरंजन
प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
डी.ए.वी. कॉलेज.,
महोबा

मुख्य शब्द : हिन्दी काव्य, जीवन प्रक्रिया,

प्रस्तावना

नागार्जुन की 1952 में लिखी गई ''अकाल और उसके बाद'' कविता मानवीय जीवन की तथा सम्पूर्ण पारिस्थितकीय तंत्र की भौतिकवादी व्याख्या है। इस कविता में कवि ने ऐसे ही विपन्न परिवार को अकाल का सामना करते हुए दर्शाया है। इसमें चुनी गयी समस्या भी अपने विधान में प्रगतिवादी है। प्रगतिवादी विचारधारा वस्तुतः मार्क्सवाद से प्रेरित है, जिसका मूल आधार रहा है– पेट का भरना जीवन की मूलभूत आवश्यकता है तथा सभी मानवीय सांस्कृतिक, आत्मनिष्ठ परिघटनायें व्यक्तित्व उत्पादन की वस्तुनिष्ठ प्रविधियों से निर्धारित होती है।अकाल और उसके बाद कविता नकारात्मक और कुछ हद तक सकारात्मक सी दिखती स्थितियों का एक चित्र भर ही है परन्तु दुख दर्द के बीच हल्की सी खुशी को भी अनुभव कर लेने वालों की जीवन्तता को प्रत्यक्ष करने में पूर्णतया सक्षम है।

उद्देश्य

नागार्जुन मूलतः विपन्न चेतना के कवि हैं, इन्होनें स्वयं अपने क्षेत्र व परिवार में विपन्नता का अनुभव किया है। जहॉ अकाल जैसी स्थितियां विपन्नता को और अधिक भयावह बना देती है। यह कविता अकाल की विभीषिका दिखाती है। जहॉ प्राकृतिक आपदाऐं आकर यूं ही नही चली जाती बल्कि अपने पीछे अनेक भयावह चिन्ह छोड़ जाती हैं। जिसका प्रभाव सबसे अधिक आम जन पर पड़ता धनिक वर्ग प्रत्येक समस्या से जूझने के लिये राहें खोज लेता है। पर विपन्न हालत में जीने को मजबूर वर्ग जो प्रतिदिन 'कुआं खोदने और पानी पीने' की स्थिति में रहता है– को ही समस्त विपदाओं का शिकार बनना पड़ता है। नागार्जुन की इस कविता में अनुभव जनित विपन्नता को ही अभिव्यक्त किया गया है। जो उनकी ही पीड़ा नहीं वरन् समस्त विपन्न आमजन की पीड़ा है।

साहित्यावलोकन

नागार्जुन अपने रचनात्मक वैशिष्ट्य में प्रगतिवादी विचार को लिए हुए भी उसकी संकीर्ण विचारधारा का विस्तार करते रहे हैं। इस सन्दर्भ में वे कहीं कबीर की याद दिलाते है तो वही कहीं निराला की सघन अनुभूति को छूते हुऐ दिखायी देते है। वैसे यदि जरा और व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो नागार्जुन के काव्य में अब तक की पूरी भारतीय काव्य परंपरा ही जीवित रूप में उपस्थित देखी जा सकती है। नामवर सिंह का तो यहाँ तक मानना है कि ''इस बात में तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं कि तुलसीदास के बाद नागार्जुन अकेले ऐसे कवि हैं जिनकी पहुँच आम आदमी से लेकर काव्य रसिकों की गोष्ठी तक है''। उनका कवि व्यक्तित्व बौद्ध एवं मार्क्सवाद जैसे बहुजनोंन्मुख दर्शन के व्यावहारिक अनुगमन तथा सबसे बढ़कर अपने समय और परिवेश की समस्याओं चिन्ताओं एवं संघर्षो से प्रत्यक्ष जुड़ाव व लोक हृदय की गहरी पहचान से निर्मित है।

समस्या प्रगतिवादी किन्तु समाधान नहीं

नागार्जुन की ''अकाल और उसके बाद'' की कविता का केन्द्रीय भाव उत्पादन की भौतिकतावादी प्रक्रिया पर निर्भरता का है। किन्तु समस्या के स्तर पर, न कि समाधान के स्तर पर। प्रगतिवादी–मार्क्सवादी विचारधारा का मानना रहा है कि सभी समस्याओं का समाधान– पूँजीपति शोषक वर्ग का हिंसक क्रांति के माध्यम से हो सकता है। नागार्जुन जनता की व्यापक संवेदना से जुड़े कवि थे। एक जनकवि के रूप में नागार्जुन जनता की व्यापक संवेदना से जुड़े कवि थे एक जनकवि के रूप में नागार्जुन जनता के प्रति स्वंय को जबाबदेह समझते हैं, किसी राजनीतिक विचारधारा के प्रति नहीं। अतः नागार्जुन अपनी प्रगतिशील दृष्टि से समस्या का समाधान हिंसक क्रांति के रूप मे नहीं देते हैं किन्तु कवि की अंतिम चार लाइने ''कई दिनों के बाद'' उस सहज समाधान को पेश करती है जो कि मार्क्सवादी विचारधारा से अलग है।

मानवीय जगत व सम्पूर्ण पारिस्थतकीय तन्त्र की भौतिकवादी व्याख्या

कविता ''अकाल और उसके बाद'' संवेदना के स्तर पर मानवीय जीवन और सम्पूर्ण पारिस्थतकीय तंत्र की भौतिकवादी व्याख्या करती है। नागार्जुन वैसे भी भौतिकवादी संसार के कवि रहे हैं। जो उनकी कविता ''बादल को घिरते देखा'' में देखा जा सकता है। सम्पूर्ण मानव जगत मानवेत्तर जगत यहाँ तक कि जड़ तत्व भी अकाल व भुखमरी के कारण परेशान है। अन्न के दाने न होने के कारण चूल्हे का रोना व चक्की का उदास होना तथा इसके परिणाम स्वरूप मानव व जीव जंतु सहित प्रकृति का आक्रान्त होना रचना में ''नेकेड सोल'' के रूप में आया है। नामबर सिंह कहते हैं कि ''नागार्जुन की यह कविता भारतीय जनता की समस्याओं के प्रति प्रखर चेतना की कविता है'' इस अकाल के कारण कानी कुतिया का चूल्हे के पास सोना दीवारों (भीत) पर छिपकलियों का गश्त लगाना चूहों की हालत शिकस्त रहना में उनकी व्यापक संवेदना को प्रदर्शित करता है। डॉ0 रामविलास शर्मा के अनुसार नागार्जुन की ये कविता पारिस्थितयों और घटनाओं पर चोट करके मानवीय संवेदनाओं को उद्घाटित करती है।''[3]

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया, सोई उनके पास ।
कई दिनों तक लगी भीत पर, छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी, हालत रही शिकस्त।[4]

कविता की अंतिम चार लाइने ''कई दिनों के बाद'' अन्न के दाने घर आने पर आंगन से धुऐ का उठना तथा कौए जैसे पक्षी का भी पंखों का खुजलाना प्रभावित करता है। जैसे सम्पूर्ण मानवीय व मानवेत्तर जगत उत्पादन पर ही निर्भर होकर रह गया है। केदारनाथ सिंह कहते है कि ''नागार्जुन जितना देखते हैं सुनते हैं या महसूस करते हैं। उसे पूरा का पूरा सम्पूर्ण अनगढ़पन के साथ आभिव्यक्त कर देते हैं।[5] वास्तव में ''कई दिनों तक'' व ''कई दिनों के बाद'' की मध्यवर्ती स्थितियों की मानवीय तंत्र व परिस्थितकीय तंत्र तथा उत्पादन के मध्य के भौतिकतावादी सम्बन्धों को व्याख्यायित कर देती है।

दाने आये घर के अन्दर, कई दिनों के बाद।
धुआँ उठा आँगन के ऊपर, कई दिनों के बाद।
चमक उठी घर भर की आँखें, कई दिनों के बाद।
कौए ने खुजलाई पाँखें, कई दिनों के बाद ।[6]

नागार्जुन का संघर्ष के प्रति समग्र दृष्टिकोण

मूलतः देखा जाये तो यथार्थ केवल अंधेरे के तले ही नही, अंधेरे को चीरने वाले उजाले में भी होता है। नागार्जुन प्रेमचन्द्र की तरह इसी विचारधारा के समर्थक रहे है। वहीं पर प्रगतिवाद की संकीर्ण मान्यता का अतिक्रमण भी करते है। प्रगतिवाद की मूल मान्यता है कि छोटे–छोटे सुखों पर मुग्ध होना वर्ग–संघर्ष की चेतना के खिलाफ है। इसी कारणवश प्रगतिवादियों ने यर्थात के कुरूपता का पर्याय और सौंदर्य को शोषण का पर्याय माना है। इस दृष्टि से प्रगतिशील निराला ने कुकुरमुत्ता में गेहूँ बनाम गुलाब नहीं अपितु गेहूँ और गुलाब के माध्यम से तोड़ा है। तो वहीं दूसरी ओर नागार्जुन नें ''अकाल और उसके बाद'' तथा ''बादल को घिरते देखा'' है के माध्यम से। जहाँ कई दिनों तक (प्रारम्भ की चार लाइनें) के माध्यम से जीवन में अभाव दुखकर स्थितियों व चिंताग्रस्त मानव मानवेत्तर समाज की विभीषिका की व्याख्या करते हैं। तो वही ''कई दिनों के बाद'' के माध्यम से अभाव के उपरान्त मिलने वाले संतोष तथा इसी संदर्भ में सुखकर सिथितियों के माध्यम से अंधेरे व उजाले का परस्पर समन्वय करते हैं।

कई दिनों तक चूल्हा रोया , चक्की रही उदास ।
चमक उठी घर भर की आखें, कई दिनों के बाद।

व्यापक संवेदना

आर्चाय रामचन्द्र शुक्ल का ''कविता की महानता के संदर्भ में दृष्टिकोंण रहा है कि कविता की संवेदना जितनी व्यापक होती है कविता उतनी ही महान बनती जाती है। सर्वाधिक व्यापक संवेदना वहाँ होती है जहाँ मानव के साथ साथ मानवेत्तर सजीव जगत ही नही बल्कि जड़ जगत भी शामिल हो जाये।'' अकाल और उसके बाद कविता आकार में जितनी छोटी होती है प्रभाव क्षमता व व्यापक संवेदना में उससे कही अधिक ज्यादा पाठक पर संवेदनीय प्रभाव छोड़ती है। नामवर सिहं के

शब्दों में ''अकाल का ऐसा जीवन्त–मार्मिक विभीषकीय वर्णन अनुभूति के धरातल से सम्पूर्ण जगत पर पीड़ा का अहसास छोड़ जाता है।[7] जड़ वस्तुऐ चूल्हा, चक्की, कुतिया, छिपकली, चूहे तथा मानव सभी में तनाव की परतें व अभाव जनित दुख को सूचित करने लगती है। डॉ0 रामविलास शर्मा ने व्यापक संवेदना की ओर संकेत करते हुये कहा है कि ''ऐसा वर्णन मात्र कविता का ही हिस्सा नहीं है, बल्कि जीवन का हिस्सा है–बिल्कुल सच्ची घटना है।''[8]

वस्तुनिष्ठवादी प्रकृति बोध

बाबा के कविता कर्म की मान्यता सदैव प्रकृति सौन्दर्य तथा यथार्थ की वस्तुनिष्ठ वास्तविक व्याख्या के पक्ष में रही है। यह उनकी कविता ''बादल को घिरते देखा है'' में तथा ''अकाल और उसके बाद'' दोनो में देखा जा सकता है। प्रकृति की विषयवस्तु जहाँ छायावादी प्रतीत होती है, वही प्रकृति बोध व प्रकृति चेतना की दृष्टि इसके विपरात दिखती है। छायावाद में प्रकृति काल्पनिक है जहॉ प्रकृति के केवल सौदर्य पक्ष का ही प्रवेश मिल पाता है। वहीं प्रगतीशील निराला की प्रकृति चेतना सुंदर और असुन्दर का मिश्रण रखती है, ''कुकुरमुत्ता'' में इस चेतना को देखा जा सकता है।

आया मौसम खिला फारस का गुलाब,
बाग पर उसका पड़ा था रोब दाब
वही गन्दे में उगा देता हुआ बुत्ता
पहाड़ी से बोला कुकुरमुत्ता।[9]

किन्तु नागार्जुन के सम्पर्क में आकर प्रकृति का अभिजात्य सौदर्य पूर्णतः गायब हो गया है। प्रकृति के नाम पर कानी कुतिया , छिपकली, चूहे और कौआ ही शमिल हुए है। यह जीवन से वास्तविक रूप से जुड़ी हुई प्रकृति है। नागार्जुन की इस कविता में जीवन से जुड़ी हुई प्रकृति है तो वहीं ''बादल को घिरते देखा है'' में जीवन से कटी हुई प्रकृति को जीवन से जोड़ने की कोशिश है।

विश्व दृष्टि

वास्तव मै नागार्जुन ने ''कई दिनो तक'' और ''कई दिनो के बाद'' की आवृत्तियों में अपनी अनुभूतियों से मध्यवर्गीय वर्ग के उस तनाव को कुरेदने की कोशिश की है, जो उसकी नियति बनता जा रहा है। जहॉ उनकी विशाल दृष्टि सम्पूर्ण मानव जगत में इस विडम्बना को महसूस करा रही है। तभी तो केदारनाथ सिंह कहते है कि ''जिस बात के चलते नागार्जुन की कविता अपने सर्वोत्तम रूप में व्यक्तिगत अनुभव और जनता के सामान्यबोध से मिलकर बनी है। वह है उनकी विश्वदृष्टि जो तात्कालिकता व स्थानीयता को अतिक्रान्त कर जाती है।''[10] नागार्जुन की यथार्थवादी वस्तुनिष्ठ समग्र दृष्टि अपनी रचना धर्मिता में पाठक पर हरपल सहज प्रभाव छोड़ने में सफल रही है।

निष्कर्ष

नागार्जुन की कविता आम आदमी के जीवन को समग्रता में देखती है। वे अपने रचनात्मक वैशिष्टय में नकारात्मक और सकारात्मक दोनों स्थितियों का चित्रण करते है। जहां अकाल के समय मानव ही नहीं मानवेत्तर जगत भी भुखमरी के कारण शिथिल है। साथ ही यह कविता ''अकाल के समय'' की विभीषिका और अभाव में भी जीने की इच्छा को व्यक्त करती है। वहीं ''अकाल के बाद'' ज्यो ही दाने घर के अन्दर आते है सम्पूर्ण मानव मानवेत्तर यहाँ तक कि जड़ जगत में भी चेतना का संचार हो उठता है। नागार्जुन इसी सजग–संवेदनीय मानवीय दृष्टि से प्रकृति, समाज व विश्व को देखते है अतः कह सकते है कि अपनी प्रभावान्विति में ''अकाल और उसके बाद'' कविता में अभिव्यक्त नागार्जुन की करूणा साधारण दुर्भिक्ष के दर्द से बहुत आगे तक की लगती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *नामवर सिंह ''नागार्जुन की प्रतिनिधि कविताऐं'' राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली –1996, पृ0सं0–10*
2. *नामवर सिंह ''आलोचना'' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–1981, पृ0सं0–56*
3. *डा0 रामविलास शर्मा ''नयी कविता व अस्त्विवाद'' राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली–1978, पृ0स0–39,40*
4. *''नागार्जुन की चयनित कविताऐं'' संपादन–मैनेजर पांडेय, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित, तीसरी आवृत्ति 2014, पृ0सं0–39*
5. *केदारनाथ सिंह ''मेरे समय के शब्द'' राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली –1993,पृ0सं0–59*
6. *''नागार्जुन की चयनित कविताऐं'' संपादन–मैनेजर पांडेय, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित तीसरी आवृत्ति–2014, पृ0सं0–39*
7. *नामवर सिंह ''आलोचना'' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली – 1981, पृ0स0–57*
8. *डा0 रामविलास शर्मा ''नयी कविता और अस्तित्ववाद'' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–1978, पृ0सं0–148*
9. *डा0 रामविलास शर्मा ''निराला राग–विराग'' लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद–2000 पृ0सं0–145*
10. *केदारनाथ सिंह ''मेरे समय के शब्द'' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली–1993,पृ0स0–50*